समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Sunday, 20 September 2026

तमिलनाडु की राजनीति मे विजय की एंट्री : गेमचेजंर या एक और खिलाड़ी ?

Publisher

Published on 13 Sep 2025

तमिल सिनेमा के सुपरस्टार विजय ने आखिरकार राजनीति में अपनी आधिकारिक एंट्री कर ली है। लंबे समय से चल रही अटकलों और चर्चाओं के बाद विजय ने चुनावी मैदान में उतरने का ऐलान करते हुए तमिलनाडु की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या विजय राज्य की राजनीति में 'डिसरप्टर' यानी बदलाव लाने वाले साबित होंगे या फिर वे भी सिर्फ एक और खिलाड़ी बनकर रह जाएंगे।

तमिलनाडु की राजनीति और फिल्मी दुनिया का रिश्ता पुराना है। एम.जी. रामचंद्रन (एमजीआर), जयललिता और करुणानिधि जैसे नेताओं ने फिल्मों से राजनीति में आकर बड़े मुकाम हासिल किए। अब विजय की एंट्री इसी परंपरा को आगे बढ़ाती दिख रही है। विजय के पास अपार जनसमर्थन और खासकर युवाओं में जबरदस्त लोकप्रियता है। उनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट होती हैं और उनका नाम तमिलनाडु में करिश्माई नेता के रूप में देखा जाता है। यही वजह है कि उनकी राजनीतिक एंट्री को लेकर जनता में उत्साह है।

विजय ने हाल ही में अपने समर्थकों और पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए चुनावी बिगुल फूंका। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी राजनीति का उद्देश्य भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई और जनता के लिए पारदर्शी शासन है।
हालांकि अभी तक उन्होंने अपने राजनीतिक दल का पूरा खाका और उम्मीदवारों की सूची घोषित नहीं की है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि उनकी पार्टी दक्षिण भारत की चुनावी राजनीति में हलचल मचाएगी।

तमिलनाडु की राजनीति पर लंबे समय से द्रमुक (DMK) और अन्नाद्रमुक (AIADMK) का दबदबा रहा है। इसके अलावा बीजेपी और कांग्रेस भी गठबंधनों के जरिए अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं।
ऐसे में विजय की एंट्री इस समीकरण को बदल सकती है। यदि विजय युवा मतदाताओं और शहरी क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करते हैं, तो यह द्रमुक और अन्नाद्रमुक दोनों के लिए चुनौती होगी। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में अभी उनकी पकड़ उतनी मजबूत नहीं मानी जा रही है।

विजय की एंट्री पर तमिलनाडु के प्रमुख राजनीतिक दलों ने अलग-अलग प्रतिक्रिया दी है।

- **द्रमुक (DMK):** विजय को 'अनुभवहीन' कहकर उनकी राजनीतिक योग्यता पर सवाल उठाया।
- **अन्नाद्रमुक (AIADMK):** उन्हें 'युवा शक्ति की आवाज़' बताया, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि राजनीति सिर्फ लोकप्रियता से नहीं चलती।
- **भाजपा (BJP):** विजय की पार्टी को संभावित सहयोगी या विरोधी, दोनों ही नजरिए से देख रही है।
- **कांग्रेस :** उनका कहना है कि राजनीति में नए चेहरे आना लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत है।

विजय को जनता का बड़ा वर्ग 'मसीहा' की तरह देख रहा है। खासकर युवा उन्हें भ्रष्टाचार-मुक्त और आधुनिक शासन का प्रतीक मानते हैं।
हालांकि कई राजनीतिक विश्लेषक यह भी चेतावनी दे रहे हैं कि केवल स्टारडम राजनीति में सफलता की गारंटी नहीं है। जनता अब मुद्दों पर आधारित राजनीति चाहती है, सिर्फ करिश्मा या लोकप्रियता से आगे बढ़कर।

चुनौतियाँ विजय के सामने

1. **संगठन निर्माण :** किसी भी राजनीतिक दल के लिए मजबूत संगठन सबसे बड़ी ताकत होता है। विजय को इसे खड़ा करने में वक्त लगेगा।
2. **गठबंधन की राजनीति :** तमिलनाडु में गठबंधन अहम भूमिका निभाता है। विजय को सही पार्टनर चुनना होगा।
3. **ग्रामीण क्षेत्रों मे पंहुंच :** शहरी इलाकों में भले ही उनकी लोकप्रियता ज्यादा हो, लेकिन ग्रामीण इलाकों तक पहुंचना उनके लिए चुनौती होगी।
4. **नीतिगत स्पष्टता :** जनता यह जानना चाहती है कि उनकी नीतियां शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी ढांचे पर क्या होंगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि विजय की एंट्री तमिलनाडु की राजनीति में निश्चित रूप से नई ऊर्जा लाएगी। यदि वे युवाओं, किसानों और महिलाओं को अपने पक्ष में कर लेते हैं, तो 2025 का चुनाव उनके लिए बड़ा अवसर साबित हो सकता है। लेकिन यदि वे संगठनात्मक स्तर पर मजबूत नहीं हुए, तो उनकी पार्टी का हश्र उन अन्य फिल्मी सितारों जैसा हो सकता है, जिन्होंने राजनीति में कदम तो रखा लेकिन लंबे समय तक टिक नहीं पाए।

विजय की राजनीतिक एंट्री तमिलनाडु की राजनीति में रोमांच और उत्सुकता दोनों लेकर आई है। उनके सामने अपार संभावनाएं हैं, लेकिन उतनी ही बड़ी चुनौतियाँ भी हैं। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या विजय सचमुच 'डिसरप्टर' साबित होंगे या फिर वे भी उन नेताओं की कतार में शामिल हो जाएंगे, जो राजनीति में आते तो हैं, लेकिन लंबे समय तक प्रभाव नहीं छोड़ पाते।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.